प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 6.11.67

रिकार्ड– भोलेनाथ से निराला.....ओमशांति। बच्चों ने गीत सुना और भोलेनाथ का नाम सुना। नाम कितना बड़ा है। समझ में आता है कोई बहुत बड़ी चीज है ;परंतु है बहुत2 छोटी चीज। ऐसी छोटी वस्तु दुनियां में कोई नहीं होगी। छोटी चीजें तो बहुत होती हैं। हीरे कितने छोटे होते हैं। एक रत्ती में 100होते हैं। जैसे सुई का पाखा कितना छोटा होता है। सिलाई करने में भी टोटी पहनते हैं। उस पर सुई को उठाते हैं। तो नाम कितना है भोलानाथ शिवबाबा। है कितनी छाटी ,अति छोटी चीज है, जो इन आंखों से भी देखने में नहीं आय सकते। सुई तो फिर भी आंखों से देखने में आती है। आत्मा इतनी छोटी है जो इन आंखों से नहीं देखी जा सकती। उसका नाम है भोलानाथ शिव। फिर उनको मनुष्यों ने शिव–शंकर मिला दिया है। अब कहां वह इतनी छोटी बिंदी, कहां शंकर इतना बड़ा। दोनों को मिलाय देते। बाप बैठ समझाते हैं इतनी छोटी बिंदी ,इन पर फिर माया का आवरण चढ़ जाता है। कितनी छोटी आत्मा है। सुई के नोंक से भी छोटी। जो सिर्फ दिव्य चक्षु से उनको देखा जाता है। उनमें माया का कितना आवरण है। कितनी समझने की बातें हैं। फिर उस आवरण को मिटाना पड़ता है। कट उतरे तब आत्मा प्योर हो जाये। बाप कैसे और क्या आकर समझाते हैं यह किसकी बुद्धि में नहीं है। आत्मा कितनी छाटी चीज है। उन पर कैसे कट चढ़ती है। फिर योगबल से सतोप्रधान बनते हैं। देखने में भी नहीं आती है। कितनी छोटी आत्मा है। गाते भी हैं भृकुटि के बीच चमकता है सितारा। इन बातों पर कोई विचार नहीं कर सकते हैं। भल मुख से कहते हैं भृकुटि के बीच चमकता है सितारा ;परंतु वह कैसा होगा कुछ भी नहीं जानते। आत्मा और परमात्मा का पता हो तो उस पर सोच चले ना। जरा विचार करो कितना महीन सोच चलता होगा। आत्मा कितनी छोटी बिंदी है, जो इन आंखों से भी नहीं देखी जाती। इनको दिव्य दृष्टि से देखा जाता है। आत्मा भी देखी जाती। परमात्मा भी देखा जाता है दिव्य दृष्टि से। हैं दोनों एक। इतनी छोटी आत्मा पर कैसे माया का आवरण होता है। जिसको मोटे रूप में कट कहते हैं। यह भी समझने की बातें हैं। कट योगबल से उतरनी भी जरूर है। बाप के साथ बुद्धि का योग लगाना है। अभी तुम बच्चों को समझ वही मिलती है जो कल्प पहले मिलती रहती है। मामेकम् याद करो। कौन कहते हैं?फिर उसके उपर आओ। कितनी छोटी चीज फिर इन शरीर द्वारा आय बात करती है। इन सब महीन बातों पर विचार–सागर–मंथन करना होता है। ऐसे बहुत कोई मुश्किल बच्चे हैं जो ऐसी2 महीन बातों पर विचार करें और समझें कि आत्मा क्या है ,परमात्मा क्या है ;क्योंकि यह है बेहद की समझ की बातें। कई तो इन बातों को समझ भी न सके। मूंझ कर अपने ही धंधे आदि में लग जावेंगे। मोटी बुद्धि वालों (की) कट उतर न सके। इसमें बड़ी महीन बुद्धि चाहिए। मोटी बुद्धि और महीन बुद्धि किसको कहा जाता है। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। इतनी महीन बातें हैं, जो किसकी बुद्धि में बैठना बड़ा मुश्किल है। अच्छी रीति कोई विचार–सागर–मंथन करे ो बुद्धि में आये। ऐसी आत्मा को अपने बाप की याद में रहना है। आत्मा कितनी छोटी है। यह शरीर तो कितना बड़ा है। इतने बड़े शरीर में कितनी छोटी आत्मा है। वंडर है ना। इसके लिए ही बाप कहते हैं मैं तुमको बहुत गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूं। बहुत गुह्य है। यह गुह्यतम बातें हैं। तुमको अभी बाप द्वारा मालूम पड़ता है। आत्मा का रूप भी अभी तुम वर्णन करते हो। कितनी छोटी चीज है। उनको कैसे प्योर करते हैं। इसमें बहुत2 महीनता में आना पड़ता है। बात एक सेकेंड की पर कितनी सूक्ष्म है। तुम विचार करेंगे आत्मा कितनी छोटी है। याद करने से ही यह तो एकदम उड़ जानी चाहिए। सेकेंड में जीवनमुक्ति कहा जाता है ना। तो आवरण को हटाने लिए एक सेकेंड लगना चाहिए। आवरण कैसे हटे इसका खयाल किया जाता है। कितना महीनता में जाना पड़ता है। जहां वाणी की भी.....नहीं। वाणी कहां से निकलेगी?इतनी छोटी चीज। इतनी महीन। इनसे वाणी कैसे निकलेंगे?आत्मा जो है ,जैसे है उनको पूरी रीति समझना है। कोई भी साधु–संत आदि किसको भी आत्मा का ज्ञान नहीं है। कहते तो सब हैं कि माया का आवरण चढ़ा है ;परंतु समझते कुछ भी नहीं। यह तुम बच्चों को ही बाप बैठ समझाते हैं। यह तो बड़ी मेहनत का काम है। आत्मा को फिर से यह बनना है। इसके लिए आत्मा सिर्फ प्योर होती है। कितनी छोटी है। इनको प्योर बनाना है। इन बातों का वर्णन बहुत

महीन बुद्धि वाला ही कर सकता है। कितनी छोटी आत्मा है। उनको प्योर करना है। सेकेंड में टिक2 होती है ना। इतनी में प्योर होना है। यह बड़ी समझ की बात है। हम कितना याद करेंगे उस छोटी सी चीज को उतना हम प्योर होते जावेंगे। इतनी छोटी है जो याद करने में सेकेंड भी नहीं लगना चाहिए। जरी से चीज है। बाप को याद किया और प्योर बने। कट उतर जानी है। इसमें क्या देरी लगेगी। ऐसी2 महीन बातों को जब सोच किया जाता है तो उसमें ही जैसे लीन हो जाते हैं। बहुत डीप जाने से शरीर ही जैसे भूल जाता है। उस उसमें ही जैसे लग जाते हैं। बाप बैठ यह सब समझाते हैं। कितनी गुह्य ते गुह्य बातें हैं। इसमें टाइम नहीं लगना चाहिए। इतनी छोटी सी चीज प्योर बनाने में यह तो मिनट की बात है। बाप स्वयं बैठ बताते हैं। बच्चों को इतना जास्ती टाइम क्यों लगता है ;क्योंकि घड़ी2 भूल जाते हैं। बाप अपने लिए कहते हैं मैं जो हूं, जैसा हूं वह तो समझाता हूं ;परंतु आत्मा क्या है उनको भी जानना है। एक बार बुद्धि में आ जावे इतनी छोटी सी चीज है। बाप से योग लगाना है। यह तो कोई बड़ी बात नहीं दिखती है। इसमें इतना टाइम लगने की भी दरकार नहीं है। गाया जाता है सेकेंड में जीवनमुक्ति। कट उतर जाये। विचार की बात है ना। विचार–सागर–मंथन करते2 इस महीनता में जाते2 आत्मा प्योर हो जावेगी और फिर इस शरीर को छोड़ देंगे। तुम बच्चों को घड़ी2 भूल क्यों जाता है?बाबा समझाते तो बहुत ठीक हैं। फिर भी भूल जाते हैं। तो कट भी उतर नहीं सकती। कितना माथा मारना पड़ता है। 21जन्मों की राजाई के लिए क्यों नहीं माथा मारना चाहिए। कितनी गुह्यता में ,महीनता में जाना चाहिए। एक (को) चुपके से याद करना है। आवाज़ वाणी से परे जाना है। भल हां2 तो सब कहते हैं ;परंतु यह तो बहुत2 महीन बातें हैं। बाप कहते हैं आज तुमको बहुत गुह्तम बातें सुनाता हूं। यह भी समझाते हैं बच्चों को याद में रहना ही बड़ी मुश्किलात होती है। घड़ी2 भूल जाते हैं। ड्रामाप्लेअनुसार यह अवस्था भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आनी जरूरी है। इसको कहा जाता है अति सहज ते सहज और अति गुह्य ते गुह्य महीन ;परंतु तुम भूल जाते हो। अभी कर्मातीत अवस्था हो जाए फिर तो यह शरीर रह न सके। बाप कितना गुह्यता में ले जाते हैं। मेहनत चाहिए ना। कट उतरना ,योगबल में रहना बड़ी मेहनत है। बाप समझाते हैं बहुत एकांत में बैठ विचार–सागर–मंथन कर इतना डीप में जायें तब कुछ पता लग सके। कितनी छोटी चीज है (वह) भी बिल्कुल शांत है। इन आंखों से देखी भी नहीं जाती। अपन को आत्मा समझ और बाप की याद में रहना है। बिंदी रूप बहुत महीन होने कारण वह लोग फिर कह देते हैं नाम–रूप से न्यारा है। क्या वर्णन करें?है कितना महीन। इतना महीनता में तुम बच्चों को जाना है। इसमें बहुत2 अंतर्मुख होना होगा। बाप सम्मुख बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे जब योगबल से प्योर बन जाते हैं ,जिसको याद की यात्रा कहा जाता है। तब फिर वह आवाज में आना पसंद नहीं करेंगे ;क्योंकि आत्मा आवाज से परे है ना। 84जन्म इतनी छोटी सी आत्मा लेती आई है। नीचे उतरते2 कट चढ़ता आया है। इसलिए उनको चढ़ती कला और उतरती कला कहा जाता है। 5000वर्ष लगते हैं इम्प्योर बनने में और प्योर बनने में लगता है सेकेंड। वह भी पूरा समझ में आता है जब अंत होता है। अशरीरी अवस्था ठहर जाते हैं तो फिर नीचे उतरना भी अच्छा नहीं लगेगा। गुडमार्निंग करने से नीचे उतरना पड़ता है। फिर उस पोजिशन को पकड़ना होता है। बड़ी मेहनत लगती है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाबा तो अनुभवी है। बहुत छोटे2 हीरे आदि भी तो देखे हैं ना। जवाहरों का काम होता है सबसे बड़ा। यह भी जवाहर है। जवाहरी ही समझ सके। जवाहर बहुत पतले पत्थर होते हैं। बहुत छोटी2 होती है। इन जवाहरात का भी व्यापार किया। इस ज्ञान रत्नों को भी जवाहर कहते ना। यह कितना महीन है। किसको समझाने में भी कितनी मेहनत लगती है। बाप तो खुद है। जो जैसा है वैसा बैठकर समझावेंगे ना। बच्चों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है ना। इस विचार–सागर–मंथन में बैठना पड़ता है। जो है ,जैसा है ऐसे

उनको समझना है। फिर उनको समझने बाद योगबल में बैठे तब शरीर छोड़....आत्मा उड़ती है। ऐसी अवस्था में बच्चों को जाना है। कितनी गुह्य ते गुह्य बातें बच्चों को समझाई जाती हैं। देखते हैं समय नजदीक आता है। अब तो जाना है घर। वाणी से भी परे जाना है। अभी ही पुरुषार्थ करना है। पिछाड़ी में पुरुषार्थ करने का टाइम नहीं मिलता। बहुत हायहायकार हो जाती है। कच्चे तो ठहर भी न सकें। उन्हों की बुद्धि में तो सम्बंधी आदि ही फिरते रहते हैं। इतनी छोटी सी आत्मा प्योर बन जाती है। कर्मातीत अवस्था हो जाती है तो लाइट का ताज मिल जाता है इतनी छोटी सी आत्मा को। शरीर के लिए नहीं कहेंगे। छोटी सी आत्मा ही प्योर बनती है। शरीर तो इस समय कोई का प्योर हो न सके। आत्मा प्योर बनती है तो आत्मा को ही लाइट मिलती है। कितनी छोटी सी आत्मा प्योर होने से कैसे लाइट आ जाती है, क्या होता है ,इन बातों पर विचार करने से ही पार चला जाना पड़ता है। कितना2 बैठ समझावें। प्योर ,डबल सिरताज आत्मा ही बनती है। अब आत्मा को लाइट तो दे न सके। कोई की ताकत नहीं। कितनी छोटी आत्मा प्योर है। पीस,प्योरिटी,प्रासपर्टी आत्मा को ही मिलती है। अभी तुम सम्मुख सुनते हो। मधुबन की ही महिमा है। बाप क्या2 बैठ बच्चों को समझाते हैं। कितनी छोटी आत्मा कैसे प्योर होती है। फिर उन पर लाइट चढ़ती है। ऐसे2 विचार–सागर–मंथन करना है। मेहनत करनी है। नहीं तो इतना उंच पद थोड़े ही पाय सकेंगे। बाप सब बातें समझाते हैं। विचार की बात है ना। लाइट किसके उपर है। शरीर के उपर शो करते हैं। आत्मा का शो तो देखने में भी न आये। विचार करो बाबा यथार्थ बोलते हैं या नहीं। इतनी छोटी आत्मा इन पर प्योरिटी का ताज कैसे आता है। ताज तो जरूर शरीर पर दिखाना पड़े। मनुष्य पवित्र रहने पर भी कितना हंगामा करते हैं। बेहद का बाप का नहीं मानते बाकी कौन रहा? हद के बाप की मत पर चलते2 तो पेट आय पड़े हो। बेहद के बाप की श्रीमत पर न चलेंगे तो श्रेष्ठ कैसे बनेंगे?आत्मा प्योर कैसे बनेगी? यह तो बहुत महीनता में जाना पड़ता है। इसमें चाहिए अंतर्मुखता। एकांत में बैठ विचार–सागर–मंथन करें। तुम जानते हो यह हमारा अंतिम जन्म है। इसमें ही पुरुषार्थ करना पड़े। पेट को रोटी टुकड़ दिया खलास। इस अवस्था में खाना भी अच्छा नहीं लगता। थोड़ा में ही खुश हो जाते। आत्मा प्योर बनने से ही देवता बनती है। विश्व का मालिक बनते हैं। तो इसमें बड़ी मेहनत करनी पड़े। अपन को आत्मा समझ बैठ जाओ। बाबा कहां तक समझावेंगे। यहां बैठ2 भी खयालात और तरफ चली जावेगी तो उबासी देने लग पड़ेगे थककर। इसमें बहुत डीप जाना पड़े। इतनी तुम बच्चों को मेहनत करनी है। वह भी बताय देते हैं अभी टाइम पड़ा है। राजाई ही कहां स्थापन हुई है। पुरुषार्थ करते रहो। अपन को आत्मा (समझ) बाप को याद करते रहें तब कहीं यथार्थ रीति याद में रहते हैं। बहुत2 महीनता है। वह अवस्था अब स्थाई हो जाये तो यह शरीर ही छूट जाये। बाबा एम ऑब्जेक्ट तो बताते ही हैं। यह बजना है। इसमें बड़ी मेहनत है। समझ में आता है लाइट आत्मा को मिलती है ,न कि शरीर को। तो ऐसे2 विचार–सागर–मंथन करना है। पास विद ऑनर हो जायें ऐसी मेहनत करनी है। याद में बैठने से फिर तिक2 भी अच्छा नहीं लगता। इसमें आवाज तो बिल्कुल नहीं चाहिए। आवाज से भी परे चले जाये वह फिर ध्यान अवस्था हो जाती है। बाप कहते हैं बहुत क्या बतावें?मन्मनाभव हो जाओ। एकांत में चक्र लगाओ। बुद्धि में यही विचार–सागर–मंथन करता रहे। अपन को आत्मा (समझ) तुम पैदल करेंगे ;परंतु यह अवस्था जगाने में टाइम भी लगेगा। जल्दी नहीं होगी। आत्मा को ही राजाई प्राप्त करनी है। डबल सिरताज बनना है शरीर धारण कर। ऐसे नहीं लक्ष्मी–नारायण के उपर कोई लाइट का ताज खड़ा है। यह सब बुद्धि से समझने की बातें हैं। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को यादप्यार गुडमार्निंग। अच्छा, बच्चों को नमस्ते। ओम।